

॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

॥ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ॥

॥ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासाय नमः ॥

॥ श्रीमते अग्रदेवाचार्याय नमः ॥

॥ चतुर्वेदोक्त धनुर्बाणाङ्कन प्रमाणः ॥

This text has been prepared by
Vishal Pandey (B.Tech IIT Kanpur)
with the blessings of
Chitrakūṭa Tulasīpīṭhādhiśvara
Jagadguru Rāmānandāchārya
Śrī Svāmī Rāmabhadrāchārya

सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्य मध्यमाम्।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे श्री गुरु परम्पराम्॥

चतुर्वेदोक्त धनुर्बाणाङ्कन प्रमाणः

ऋग्वेदः

धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम।
धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम॥

ऋग्वेदः - मण्डलः ६ / सूक्तः ७५ / मंत्रः २

धन्वना, धनुषाङ्किता इतिशेषः । अतस्तीव्राः पटवः परब्रह्मप्राप्ति प्रतिबन्धकीभूत पापनिरसने समर्थावयं समदः कामादिभिरनुष्ठितान् संग्रामान् जयेम, नन्विन्द्रियाणां विषयोन्मुख्ये कथं कामादि जयः इत्याकाङ्क्षामुच्यते। धन्वना धनुषा तदङ्कन प्रभावेणैव गाः इन्द्रियाणि जयेम इन्द्रिय जयेन च प्रसङ्ख्यानाख्यावस्था लाभे धन्वना आजिं अजन्ति गच्छन्ति परब्रह्मगन्तारो अस्मिन्निति आजिमार्गः त जयेम। धनुरङ्कन प्रसन्नेश्वर प्रदर्शितया सुषुम्नया नाड्या बहिर्निष्क्रम्य अर्चिरादि मार्गेण परब्रह्म गच्छेम इत्यर्थः । नन्वनिर्लून मायान्वयस्य कथमीश्वर प्राप्ति प्रसत्तिरित्याशङ्क्याह । धनुः कर्तृ शत्रुभूतमनादि मायासम्बन्धस्य संसार पातनौन्मुख्यं अपकृणोति अपनयति नाशयतिं यद्वा तस्य मनोरथाभावं सम्पादयति । ननु सत्सुसञ्चितादि कर्मसु कथं मायासम्बन्धस्य संसार पातनौन्मुख्यं विनाश इत्याह। धन्वना धनुषा सर्वा प्रदिशा सर्वदिग्वर्तिना नाना योनि, जन्म प्रदान समर्थानि सर्वाणि कर्माणि जयेम नाशयाम इत्यर्थः ।

हम धनुष बाण से अंकित होंगे तो परम समर्थ होकर श्रीराम परब्रह्म की प्राप्ति के प्रतिबन्धक जो पापादिक हैं उन सबका विनाश करने में परम समर्थ होकर हम कामादिकों के किए हुए युद्ध में जीतेंगे। यदि कहो कि इन्द्रिय उन्मत्त हो रही हैं तब कामादिकों का जय कैसे होगा ? तो हम धनुष अंकन के प्रखर प्रताप से उन्हें जीत लेंगे,

पुनः इन्द्रिय जय द्वारा जब प्रसंख्यानाख्य अवस्था प्राप्त होगी तब हम प्रभु की प्राप्ति के लिए उन प्रभु के उदार मार्ग में चलेंगे। धनुषाङ्कित होने से प्रभु प्रसन्नता द्वारा सुषुम्ना नाड़ी द्वारा बाहर निकल कर अर्चिरादि मार्ग से होते हुए परब्रह्म को प्राप्त कर लेंगे। यदि कहो कि माया का आवरण रहते हुए प्रभु प्राप्ति कैसे होगी ? तो हम धनुषाङ्कन के ही प्रभाव से माया का निवारण कर देंगे। माया के मनोरथों का सर्वथा अभाव कर देंगे। यदि कहो कि संचितादि कर्म रहते मनोरथों का सर्वथा नाश कैसे होगा ? तो हम धनुषाङ्कन के प्रभाव से समस्त दिशाओं पर दिग्विजय प्राप्त कर लेंगे, हमारे लिए कोई भी प्रकार का बंधन नहीं रहेगा अर्थात् हम नाना योनि जन्मप्रद कर्मों का आत्यन्तिक विनाश कर डालेंगे क्योंकि हम धनुषाङ्कित हैं ।

यजुर्वेदः

सुप॒र्णं व॑स्ते मृ॒गो अ॑स्या॒ दन्तो॒ गोभिः॒ संन॑द्धा पतति॒ प्रसू॑ता।
यत्रा॒ नरः॒ सं च॒ वि च॒ द्रव॑न्ति॒ तत्रा॒स्मभ्य॒मिष॑वः॒ शर्म॑ यंसन्॥

यजुर्वेदः - अध्यायः २९। मंत्रः ४८

या - जो। इषुः - वाण। सुपर्णम् - सुन्दर को। वस्ते - धारण करता है। अस्याः - इस बाण के। दन्तः - फण। मृगः - शत्रुओं को ढूंढ़ ढूंढ़ कर मारने वाले हैं। या - जो। इषुः - बाण। गोभिः - वेद मन्त्रों से। सन्नद्धा - युक्त होकर। प्रसूता (सती) - अधिक बलवान होकर अथवा भगवत्प्रेरित होकर। पतति - कामादि शत्रुओं को मारने के लिए वज्र के समान गिरता है। यत्रा - जिस बाण को धारण करने के लिये अथवा धारण करते ही। नरः - धर्मशील मनुष्य। सन्द्रवन्ति - श्रद्धा के साथ द्रुत हृदय बन जाते हैं। च - और। विद्रवन्ति - भगवद्भक्ति आदि शुभ प्रवृत्ति में अग्रसर बनते हैं। इषवः - बाणाः। अस्मभ्यम् - हमें। शर्म - कल्याण सुख। यं सन् - देवे ॥

सामवेदः

चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् ।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥
सामवेद उत्तरार्चिक प्रपाठकः ५ । प्रथम खण्डः । मंत्रः ३

पृथिव्यादिक भूतों का विकार भूत अत्यन्त दुस्तर संसार सागर में पड़ा हुआ ईश्वरांशजीव भगवान् के दिव्यायुधों को धारण कर लेने पर इस संसार से अपना उद्धार करने तथा सम्बन्धियों का भी भरण करने लायक (उद्धार करने लायक) परम समर्थ होकर तुरीयं धाम, प्रभु के परम धाम को प्राप्त कर लेता है, प्रकृति मण्डल का परित्याग कर नित्य सूरियों मे (भगवत्पार्षदो में) सम्मिलित होकर भगवत्समीप में पहुंच जाता है ।

अथर्ववेदः

यो वै नित्यं धनुर्बाणाङ्कितो भवति स पाप्मानं तरति स संसारं तरति
स भगवताश्रितो भवति स भगवद्रूपो भवतीत्यथर्वणीया श्रुतिः ॥
अथर्ववेदः

जो मनुष्य नित्य धनुर्बाणाङ्कित रहता है वह समस्त पापों से तर जाता है, वह संसार तर जाता है, वह भगवदाश्रित हो जाता है, वह साक्षात् भगवद्रूप ही हो जाता है ऐसी अथर्वश्रुति है ।

॥ श्रीसीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥